संगम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ की हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका

जुलाई-दिसंबर 2020

मुद्रण संस्करण 02 अंक 02

निदेशक का संदेश

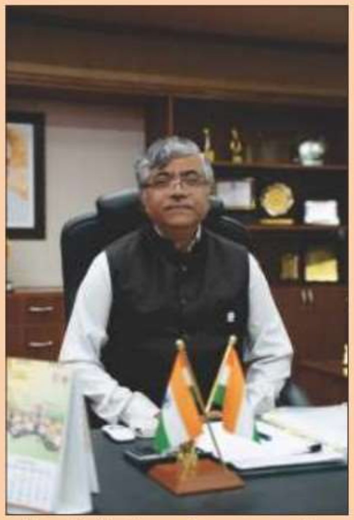

प्रिय मित्रों,

हम सभी को ज्ञात है कि न केवल भा.प्रौ.सं. रोपड़ अपितु पूरा विश्व एक बेहद मुश्किल वर्ष के अंतिम चरण पर पहुंचा है। जहां हम अभी भी इस महामारी के साथ संघर्षरत् हैं तो कुछ आशा की किरणें भी हैं जिनका हमें अपने दोनों हाथों को खोलकर स्वागत करना चाहिए ताकि आने वाले वर्ष में हम अपनी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकें और कठिनाईयों को दूर किया जा सके।

सर्वप्रथम, मैं डॉ. के. राधाकृष्णन जी को भा.प्रौ.सं. रोपड़ के अधिशासी मंडल के अध्यक्ष के रुप में नियुक्त करने हेतु शिक्षा मंत्रालय के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। हम सभी डॉ. राधाकृष्णन जी की भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के प्रमुख के रुप में मंगलयान जैसे मिशन और भा.प्रौ.सं. कानपुर के अधिशासी मंडल के अध्यक्ष के रुप में मार्गदर्शक के तौर पर तथा भा.प्रौ.सं. परिषद की स्थायी समिति के अध्यक्ष के रुप में उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के संबंध में जानते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भा.प्रौ.सं. रोपड़ डॉ. राधाकृष्णन की बुद्धिमत्ता और मार्गदर्शन से निश्चित रुप से लाभान्वित होगा। महामारी की बात करे तो हमने पहले ही हमारे देश में महामारी की स्थिति पर एक महत्वपूर्ण मंदी देखनी शुरु कर दी है, जबकि दुनिया संक्रमण और मृत्यु के तीसरे चरण से गुजर रही है, भारत के भीतर संक्रमण की संख्या के साथ–साथ मृत्यु दर में कमी उल्लेखनीय है। इसके अलावा, स्वास्थ्य–लाभ की दर भी बहुत प्रभावशाली हैं। टीकों के संबंध में भी हमारी प्रगति आशाजनक है जो आने वाले वर्ष में सामान्य स्थिति को बहाल करने और आशान्वित होने का एक प्रमुख कारण है।

महामारी प्रभावित वर्ष के अंतिम 3 माह के भीतर, भा.प्रौ.सं. रोपड़ में दो प्रमुख कार्यक्रम हुए, जो आभासीय (Virtual Mode) रुप से आयोजित किए गए। पहला, हमारे नवनिर्मित परिसर का औपचारिक उद्घाटन समारोह जो कि 22 अक्तूबर, 2020 को माननीय केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल "निशंक" की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ वही दूसरा, 04 दिसंबर, 2020 को आयोजित वर्ष 2020 का दीक्षांत समारोह था। हमारे परिसर के उद्घाटन समारोह के अवसर पर माननीय केन्द्रीय शिक्षा मंत्री महोदय ने इस घातक वायरस से लड़ने हेतु महामारी के दौरान भा.प्रौ.सं. रोपड़ के अनुसंधान प्रयासों की सराहना की। साथ ही, माननीय मंत्री महोदय ने भा.प्रौ.सं. रोपड़ द्वारा प्राप्त की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रैकिंग की भी विशेष रुप से प्रशंसा की।

संस्थान के नवम् दीक्षांत समारोह में प्रो. विजयराघवन, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अध्येताओं को उन क्षेत्रों में काम करने के लिए आमंत्रित किया, जो महामारी संकट के कारण उत्पन्न हुई है। उन्होंने पर्यावरण और महामारी के बीच एक दिलचस्प संबंध को बताया और इस तरह के ज्ञानानुशासनात्मक क्षेत्रों में कार्य करने हेतु छात्रों को अभिप्रेरित किया। सपूर्ण विश्व से हमारे छात्रों और शुभचिंतकों द्वारा इस कार्यक्रमों को देखना दीक्षांत समारोह की बड़ी सफलता रही।

मैं इस अवसर पर अपने छात्रों, संकायगणों और कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने कठिन समय के दौरान अनुकरणीय अनुकूलन और सकारात्मक सोच को दर्शाते हुए हमारे शैक्षिक कार्यक्रमों को पूर्व नियोजित रुप में संचालित किया। हमने अपने परिसर में अपने अनुसंधान शोधार्थियों की वापसी के साथ अपनी अनुसंधान गतिविधियों को भी पुनः आरंभ कर दिया है।

आज हमारे लगभग 50 प्रतिशत अनुसंधान शोधार्थी परिसर में वापिस आ गए हैं और संकाय सदस्य एवं कर्मचारिगण अनुसंधान एवं शिक्षण पर पुनः ध्यान केंद्रित करने में संस्थान को सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इस अवधि के दौरान, भा.प्रौ.सं. रोपड़ अपने संस्थान के आंतरिक मामलों की संख्या को एकल अंक तक सीमित रखते हुए इस महामारी से निपटने में सफल रहा है। यह केवल हमारे स्वास्थ्य कर्मचारियों, हमारे कर्मचारीगणों, छात्रों और संकाय सदस्यों द्वारा की गई कड़ी मेहनत के कारण संभव हुआ है। मुझे विश्वास है कि टीका और राष्ट्रानुसार घटते मामलों की नई आशा के साथ, नववर्ष 2021 न केवल समान्य स्थिति को वापिस लाएगा अपितु इस दौरान हमने कुछ सबक भी सीखें होंगे, जिनसे हम आगामी दिनों में आगे बढ़ने में सक्षम हो पाएंगे। हम अपने सभी हितधारकों को इन कठिन समय के दौरान उनके द्वारा प्राप्त सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। साथ ही, मैं हमारे नवागंतुक छात्रों का भी स्वागत करता हूं जो संस्थान परिसर में शारीरिक रुप से अनुपस्थित होते हुए भी हमसे जुड़े हैं। सुरक्षित रहें, सकारात्मक रहें और नववर्ष 2021 का स्वागत बड़े उत्साह और आशा के साथ करें।

सधन्यवाद,

जय हिंद!

Publication Committee <publications@iitrpr.ac.in>

भा.प्रौ.सं. रोपड़ का स्थायी परिसर राष्ट्र को समर्पित

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल "निशंक" ने दिनांक 22 अक्तूबर, 2020 को भा.प्रौ.सं. रोपड़ के स्थायी परिसर को राष्ट्र को समर्पित किया। इस अवसर पर श्री संजय धोत्रे, शिक्षा राज्य मंत्री ने अपनी उपस्थिति से इस समारोह की शोभा बढ़ाई। संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास, संस्थान के कुलसचिव श्री रविंदर कुमार के साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस कार्यक्रम मे उपस्थित थे।

श्री रमेश पोखरियाल "निशंक" जी ने इस बिंदु पर प्रकाश डाला कि भा.प्रौ.सं. रोपड़ देश और विदेश के अग्रणी रैकिंग प्राप्त शैक्षिक संस्थान के बीच अपना स्थान सुनिश्चित कर रहा है। टाइम्स हायर एज्यूकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैकिंग 2021 में भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने अपनी 351–400 रैंक के साथ भारत में आईआईएससी बैंगलुरु के बाद अपना स्थान सुनिश्चित किया। उन्होंने आगे यह भी कहा कि भा.प्रौ.सं. रोपड़ शोध उद्धरण में विश्व में प्रथम स्थान पर रहा है। एनआईआरएफ (NIRF) में, भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने अखिल भारतीय अभियांत्रिकी संस्थानिक रैकिंग 2019–20 में 25 वां स्थान प्राप्त किया है। साथ ही, भा.प्रौ.सं. रोपड़ क्यूएस इंडिया रैकिंग 2020में भारत में 25वीं सर्वांगीण रैंक सुनिश्चित करने में सफल रहा है और अनुसंधान गुणवत्ता, शोध पत्र उद्धरण में उच्चतम अंकों के साथ भा.प्रौ.सं. रोपड़ सभी भा.प्रौ.सं. में आगे रहा है।

माननीय मंत्री महोदय ने कोविड़–19 आपदा के दौरान भा.प्रौ.सं. रोपड़ द्वारा की गई पहलों की सराहना की। उन्होंने विशेष रुप से उल्लेख करते हुए कहा कि एकांत कक्ष एवं परिक्षण प्रयोगशाला में हवा के माध्यम से कोविड़–19 के संक्रमण से स्वास्थ्य कर्मचारियों को

संक्रमित होने से बचाने में भा.प्रौ.सं. रोपड़ द्वारा निर्मित निगेटीव प्रेशर रुम महती भूमिका का निर्वहन कर रहा है। इसी प्रकार निगेटीव प्रेशर रुग्णवाहिका को संक्रमितों के आवागमन के समय स्वास्थ्य कर्मचारियों के लिए बिना जोखिम के रुग्णवाहिका में सेवा हेतु बनाया गया था। मंत्री महोदय ने आगे यह भी सूचित किया कि भा.प्रौ.सं. रोपड़ द्वारा अभिनव यूवीजीआओई आधारित कक्ष विसंक्रमण उपकरण, यूवीसेफ का निर्माण किया गया। साथ ही संक्रमित रोगियों के साथ स्वास्थ्य कर्मचारियों के न्यूनतम संपर्क को ध्यान में रखते हुए भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने मेडी सारथी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता चालित ट्रोली नामक दो अत्याधुनिक कम लागत के स्वायत्त वाहनों का भी निर्माण किया। इसके साथ ही, मंत्री महोदय ने नवाचार एवं अनुसंधान को निरंतर केन्द्र में रखते हुए "मेक इन इंडिया" पहल की दिशा में भा.प्रौ.सं. रोपड़ द्वारा की गई पहलों की भी सराहना की।

श्री संजय धोत्रे, माननीय शिक्षा राज्य मंत्री ने यह साझा किया कि आईआईटी शैक्षिक उत्कृष्टता के मुख्य संस्थानों के रुप में विश्व भर में मान्यता प्राप्त है। उन्होंने यह भी कहा कि मंत्रालय आईआईटी की धारणा को बढ़ाने की दिशा में काम कर रहा है ताकि आईआईटी विश्व रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर रहे। ''श्री धोत्रे जी ने कृषि और जल के क्षेत्र में ''प्रौद्योगिकी नवाचार हब'' (TIH) स्थापित करने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभागसे भा.प्रौ.सं. रोपड़ को हाली में प्राप्त 110 करोड़ रुपये के अनुदान की सराहना की।

प्रो. सरित के दास, निदेशक, भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने एक दशक की स्थिरता के साथ संस्थान की सफलता की कहानी साझा की जो परिसर मुख्य आयोजना (कैंपस मास्टर प्लान) की एक अनिवार्य विशेषता रही है। इस अवसर पर प्रो. दास नेहरित परिसर का एक वीडियो भी साझा किया, जो विभिन्न स्थिरता सुविधाओं पर बहुत जोर देता है, जिसमें सौर ऊर्जा, पर्यावरण के अनुकूल आवागमन विकल्प, कुशल जल प्रबंधन, स्वस्थ अपशिष्ट प्रबंधन अभ्यास, शून्य–निर्वहन, और कई अन्य उपाय शामिल हैं। भा.प्रौ.सं. रोपड़ परिसर को परिसर मुख्य आयोजना (कैंपस मास्टर प्लान) हेतु वृहद विकास के लिए एकीकृत आवास का मूल्यांकन (GRIHA LD) के लिए 5–स्टार ग्रीन रेटिंग मिली है। संस्थान ने रैंकिंग में कई पुरस्कार जीते हैं और संस्थान अपने आरंभ से ही अनुसंधान और विकास में सक्रिय रूप से शामिल रहा है।

उद्घाटन पर ट्विट्स और प्रशंसा

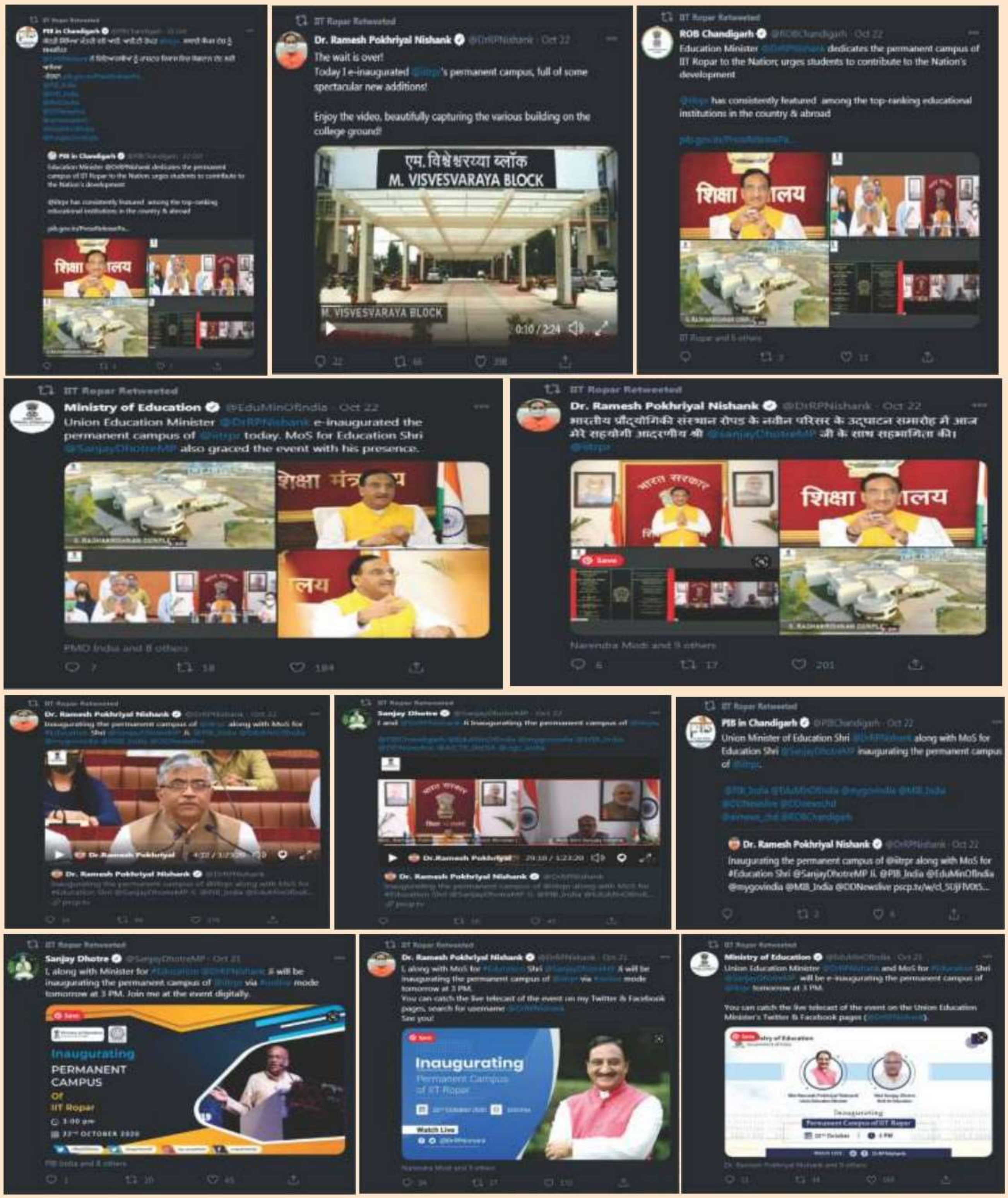

भा.प्रौ.सं. रोपड़ का आभासीय नवम् दीक्षांत समारोह संपन्न

- प्रो. के. विजयराघवन, भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में थे।
- 318 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गई।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ (भा.प्रौ.सं. रोपड़) का नवम् वार्षिक दीक्षांत समारोह दिनांक 04 दिसंबर, 2020 को आभासीय रुप में आयोजित किया गया। यह दीक्षांत समारोह पूर्व रिकॉर्डेड था और इसे यू ट्यूब पर स्ट्रीम किया गया था।

प्रो. सरित कुमार दास ने संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया और कोरोना वायरस महामारी से उत्पन्न अवरोधों के बावजूद वार्षिक दीक्षांत समारोह के आयोजन को सुनिश्चित करने हेतु संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों की बधाई दी।

दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर के. विजयराघवन, जिन्होंने दीक्षांत समारोह को संबोधित किया, ने कोविड़ के बाद की दुनिया की कुछ चुनौतियों की ओर ध्यान आकृष्टकरते हुए यह आशा व्यक्त की कि वैज्ञानिक और अभियंता समुदाय इन चुनौतियों के माध्यम से विश्व को इस संकट से निकालने में अपनी महती भूमिका निभाएंगे।

उन्होंने यह भी कहा कि पर्यावरण और जलवायु शमन के भुगतान में हम मनुष्यों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है, जो यह आज के युवाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

डॉ. के. राधाकृष्णन, अध्यक्ष, अधिशासी मंडल, भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने दीक्षांत समारोह के दौरान अपने विचारों को सभी के साथ सांझा करते हुए कहा कि शैक्षणिक उत्कृष्टता (Academic Excellence) भा.प्रौ.सं. रोपड़ का आधार है। डॉ. के. राधाकृष्णन ने अनुसंधान निष्पन्नता एवं प्रकाशनों द्वारा उन्होंने शोध के परिणामों और प्रकाशनों को उदाहरण के रूप में लेते हुए परिसर में अनुसंधान पारिस्थिति की तंत्र की प्रशंसा की।

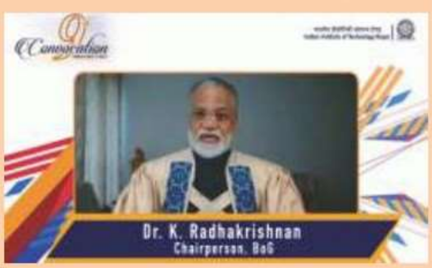

भा.प्रौ.सं. रोपड़ का कोविड-19 अनुसंधान संदर्भ

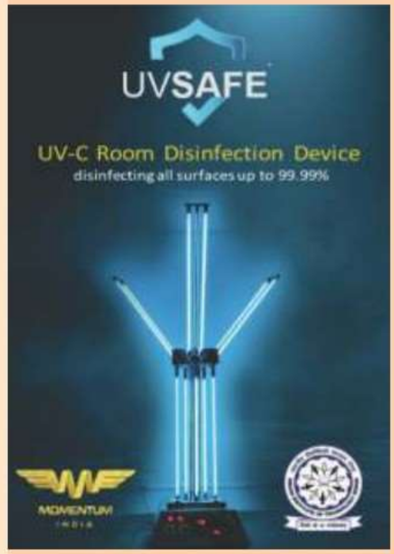

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने मोमेंटम इंडिया प्रा. लिमि. के साथ "यूवीसेफ" नामक कक्ष विसंक्रमण उपकरण (Room Disinfection Device) विकसित किया। यह उपकरण दरवाजा की घुंडी, मेज के उपर, अलमारी, कक्ष जुड़नार, दीवार के कोनों, कलाकृतियों, फर्नीचर आदि पर इस्तेमाल किया जा सकता और इसे दुबई स्पोर्ट्स सिटी में तैनात किया गया है।

इनएक्टस भा.प्रौ.सं. रोपड़ समूह ने जल और भूमि प्रदूषण के खतरे को कम करने के लिए पुराने कपड़ों से 300 से अधिक बायोडिग्रेडेबल मास्क बनाए।

निदेशक प्रो. सरित के दास ने घातक कोविड –19 के प्रसार को रोकने के लिए एक बड़े अभियान हेतु भा.प्रौ.सं. रोपड़ परिवार को शपथ दिलायी।

पुरस्कार एवं मान्यता

डॉ. राजेश वी. नायर, सह प्राध्यापक, भौतिक विभाग, भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने देश का शीर्ष एवं सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी पुरस्कार, भौतिक विज्ञान में स्वर्णजयंती अध्येतावृत्ति प्राप्त की। वर्ष 2008 में स्थापित द्वितीय पीढ़ि की आईआईटी में से भा.प्रौ.सं. रोपड़ के डॉ. राजेश वी. नायर प्रथम संकाय है जिन्होंने भौतिकी विज्ञान में अध्येतावृत्ति प्राप्त की है।

डॉ. प्रबल बैनर्जी, सह प्राध्यापक, रसायन विभाग, भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने रसायन विज्ञान में अपने अनुसंधान सहयोग की मान्यता स्वरुप भारतीय रासायनिक अनुसंधान सोसायटी का प्रतिष्ठित कास्य पदक प्राप्त किया।

डॉ. नीतिन औलक, सह प्राध्यापक, कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग, भा.प्रौ.सं. रोपड़ को प्रतिष्ठित संगामिता और अभिकलनः अभ्यास एवं अनुभव पत्रिका के संपादक के रुप में सेवा देने हेतु चयनित किया गया।

डॉ. अनुपम बंदोपाध्याय, सहायक प्राध्यापक, रसायन विभाग, भा.प्रौ.सं. रोपड़ को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित पत्रिका प्रोटेन एवं पेप्टाइड लेटर्स के संपादकीय सदस्य के रुप में चयनित किया गया।

संछीलन कणों के साथ अवस्तर के विलेप हेतु प्रौद्योगिकी के आविष्कार के लिए प्रथम यूएस पेटेंट प्रो. हरप्रीत सिंह, प्रो. क्रिस्टोफर बर्नेडेट और श्री मलकीत सिंह को प्रदान किया गया।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के साथ समझौता ज्ञापन

भा.प्रौ.सं. रोपड़ और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने "राजमार्ग तटबंध के लिए पृष्ठ भरण सामग्री के रूप में चावल की भूसी की राख, खोई राख और नीचे की राख का उपयोग" और पहाड़ी सड़कों हेतु ढलान की निगरानी तथा भूस्खलन की खतरनाक मात्रा के ठहराव के लिए अनुसंधान हेतु दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।

आयोजन

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में संविधान दिवस 2020 मनाया गया....।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में बड़े उत्साह के साथ संविधान दिवस मनाया गया। यह एक आनलाइन आयोजन था संविधान दिवस की प्रस्तावना भा.प्रौ. सं. रोपड़ के निदेशक द्वारा पढ़ी गई। इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्यों, प्रशासनिक कर्मचारीगणों तथा विद्यार्थियों ने उपस्थिति दर्ज की। प्रो. सरित के. दास ने इस अवसर पर संवैधानिक नैतिकता और हमारे संविधान को अपनाने की 71 वर्षों की यात्रा में प्रमुख मील के पत्थर पर भी प्रकाश डाला।

संविधान दिवस

सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2020

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2020 के दौरान श्री कंवलदीप सिंह, एसएसपी, सतर्कता ब्यूरो, पंजाब (रुपनगर सीमा) द्वारा "ईमानदारी—जीवन जीने का एक तरीका" विषय पर आमंत्रित व्याख्यान दिया।

74वां स्वतंत्रता दिवस

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने कोविड़–19 को देखते हुए सामाजिक दूरी और मास्क लगाना आदि मानदंड़ो का दृढ़ता से पालन करते हुए बिना किसी भव्यता के सादगीपूर्ण स्वरुप में 74वां स्वतंत्रता दिवस मनाया।

हिन्दी पत्रिका

आई.आई.टी. रोपड़ में ऑनलाइन हिंदी पखवाड़ा 2020 का आयोजन

14 सितंबर 2020 को आई.आई.टी रोपड़ के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास जी की अध्यक्षता और संबोधन के साथ आई.आई.टी रोपड़ के 15 दिवसीय हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। हिंदी दिवस के अवसर पर प्रो. सरित कुमार दास, निदेशक, आई. आई.टी ने संस्थान सदस्यों से समक्ष कई प्रासंगिक विषयों पर अपने विचार साझा किए।

कोविद–19 और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका पर अपने विचार साझा करते हुए उन्होने कहा कि कोविद–19 के कारण दुनिया को यह समझ में आ गया कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी केवल अध्ययन अध्यापन का विषय नहीं है बल्कि यह मानव जाति के संरक्षण और बचाव के लिए भी आवश्यक है और इसकी महती भूमिका है।

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर अपने विचार सांझा करते हुए प्रो. सरित कुमार दास ने कहा कि चाहे तकनीक हो, विज्ञान हो अथवा कोई भी ज्ञानानुशासन हो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति इन सभी के उत्थान में एक निर्णायक भूमिका का निश्चित रुप से निर्वहन करेगी।

प्रो. एस. के. दास ने अपने वक्तव्य में यह भी कहा कि इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने केवल हिंदी ही नहीं अपितु भारत की सभी भाषाओं के संवर्धन और उन्नति के बारे में गहराई से सोचा है क्योंकि इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि हिंदी को समाज में, सरकारी कामकाज में बढ़ाना है तो हमें केवल हमारे संविधान की अनुसूची (Schedule) कि भाषाओं को ही नहीं बल्कि इस अनुसूची के बाहर की सभी भाषाओं को पास लाना होगा।

अंत में प्रो. सरित कुमार दास ने कहा कि हिंदी पर चर्चा, परिचर्चा होना और इसका विकास होना हमारे राष्ट्र के लिए आवश्यक है।

इस अवसर पर प्रो. दीपक कश्यप, विभागाध्यक्ष, सिविल अभियांत्रिकी विभाग ने कहा कि कोरना संकट समय में भी आई.आई.टी रोपड़ ने अपने अनुसंधान द्वारा राष्ट्र की सेवा में अपनी तत्परता को सिद्ध किया है और इसी क्रम में हिंदी पखवाड़ा 2020 का आयोजन भी है। प्रो. दीपक कश्यप ने कहा कि हिंदी पखवाड़ा हमारे नवाचार (innovation) का सूचक है।

अंत में डॉ. अरुण कुमार, सहायक प्राध्यापक ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. सम दर्शी, सहायक प्राध्यापक ने किया।

समाचार पत्रों में हिंदी पखवाड़ा 2020 की कवरेज

पखवाड़ा के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आनलाइन माध्यम से आयोजन

हिंदी प्रकोष्ठ ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर 2020 के दौरान कुल 19 आनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया। इन 19 प्रतियोगिताओं में 05 प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के लिए, 11 प्रतियोगिताएं कर्मचारियों के लिए, 01 प्रतियोगिता संस्थान के सुरक्षा/सफाई आदि कर्मचारियों के लिए तथा प्रत्येकी एक प्रतियोगिता संस्थान कर्मचारियों के बच्चों और परिवारजनों के लिए आयोजित की गई थी।

सुरक्षा/सफाई कर्मचारियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए केवल यही एक प्रतियोगिता संस्थान के सेनेट सभागार में आयोजित की गई। शेष सभी (कुल 18 प्रतियोगिताएं) प्रतियोगिताएं आनलाइन माध्यम से आयोजित की गई।

इन सभी प्रतियोगिताओं को संस्थान के सभी स्तरों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई और सभी ने बढ़–चढ़ कर इन प्रतियोगिताओं में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।

विद्यार्थियों के लिए आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में कुल 45 पुरस्कार प्रदान किए गए। संकाय सदस्य एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में कुल 60 पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित की गई कुल 19 प्रतियोगिता में संस्थान के कुल 29 संकाय सदस्यों ने इसके मूल्यांकन के दायित्व का निर्वहन किया। साथ ही, हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता तथा कंप्यूटर पर हिंदी कार्यालय आदेश टाइपिंग प्रतियोगिता हेतु श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिंदी शिक्षण योजना, चण्डीगढ़ केन्द्र को इसके मूल्यांकन हेतु विशेष रुप से आमंत्रित किया गया था।

संस्थान में विभिन्न स्थानों पर हिंदी सुक्तियों लगाई गई

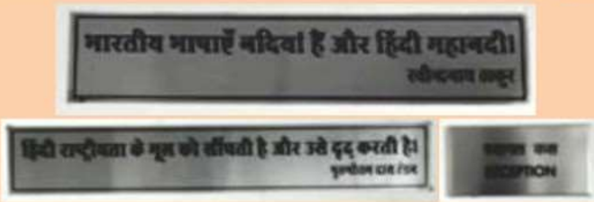

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी पखवाड़ा 2020 के संबंध में प्राप्त दिशा–निर्देशों के अनुपालन में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के परिसर में विभिन स्थानों पर हिंदी की सुक्तियां लगाई गई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति रुपनगर के सभी सदस्य कार्यालयों हेतु ऑनलाइन हिंदी कविता प्रतियोगिता का आयोजन

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित किए गए हिंदी पखवाड़ा 2020 के दौरान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति रुपगनर के सभी सदस्य कार्यालयों हेतु दिनांक 21 सितंबर 2020 को आनलाइन हिंदी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नराकास रुपनगर के सभी सदस्य कार्यालयों के सदस्यों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया जिसमेंनेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, नया नंगल, यूको बैंक शाखा रोपड़, नाइलिट, एनपीटीआई, भा.प्रौ.सं. रोपड़ आदि कार्यालयों का प्रमुखतः से समावेश था।

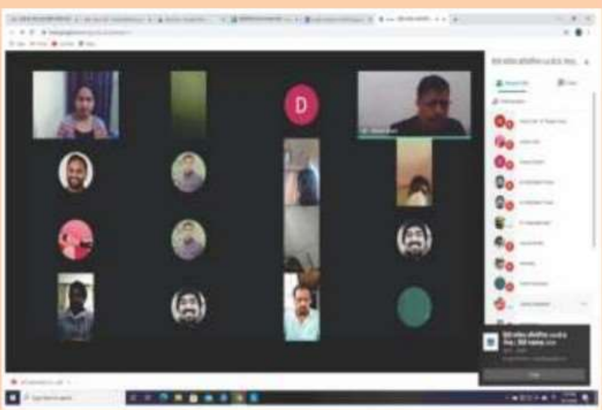

आनलाइन हिंदी कविता के दौरान प्रतिभागी अपनी कविता को प्रस्तुत करते हुए।

प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों ने अपनी कविता वाचन एवं गायन प्रस्तुति से इस प्रतियोगिता को एक अलग ही स्तर प्रदान किया। इसमें कुछ प्रतिभागियों ने स्वरचित तो कुछ प्रतिभागियों ने अन्य की कविताओं की प्रस्तुति की। इस प्रतियोगिता के परीक्षक के रुप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के सहायक प्राध्यापक डॉ. ऋत कमल तिवारी और डॉ. पुष्पेन्द्र पाल सिंह थे। इस प्रतियोगिता हेतु नैशनल फर्टिलाइर लिमिटेड के उप प्रबंधक श्री अमरजीत बेदाम को प्रथम पुरस्कार, नैशनल फर्टिलाइर लिमिटेड के पाली अभियंता श्री राकेश वर्मा और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के वरिष्ठ सहायक श्री अंशु वेद को संयुक्त रुप से द्वितीय पुरस्कार तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ की पुस्तकालय सूचना अधिकारी सुश्री हरप्रीत कौर को तृतीय पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

सभी विजेताओं को नराकास रुपनगर के अध्यक्ष श्री आर. के. जसरोटिया जी द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

अंशु वेद, वरि. सहायक तथा सुश्री हरप्रीत कौर, पुस्तकालय सूचना अधिकारी नराकास रुपनगर के अध्यक्ष श्री आर. के. जसरोटिया जी द्वारा प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम के 59 वें सत्र हेतु चार दिवसीय ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन (दिनांक 28 जुलाई से 31 जुलाई 2020)

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किए जा रहे हिंदी शब्द संसाधन (हिंदी टंकण) पत्राचार प्रशिक्षण कार्यक्रम (59 वां सत्र) हेतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के पंजीकृत 08 सदस्यों की माह नवंबर 2020 में होने वाली परीक्षा को केन्द्र में रखते हुए चार दिवसीय ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में में श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, चण्डीगढ़ ने प्रशिक्षक के रूप में सभी प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन किया।

यह ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम 28 जुलाई से 31 जुलाई 2020 तक आयोजित किया गया। इस आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के 08 पंजीकृत सदस्यों श्री अक्शप्रीत सिंह तम्बर (कनिष्ठ सहायक), श्री गुरदीप सिंह (कनिष्ठ अधीक्षक), श्री पुनीत गर्ग (सहायक कुलसचिव), श्री विकास कौशिक (वरिष्ठ सहायक), श्री दिवाकर शर्मा (वरिष्ठ सहायक), डॉ. रवि कान्त (सहायक प्राध्यापक), श्री सौरभ भाटिया (कनिष्ठ सहायक), सुश्री मनिन्दर पाल कौर (कनिष्ठ सहायक) ने हिंदी टाइपिंग करना, हिंदी में सारणी प्रारूप बनाना, हिंदी में विभिन्न आदेश, पत्रों और ज्ञापन को बनाना तथा हस्तलेख आदि का अभ्यास किया।

इस ऑनलाइन आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का दिनांक 31 जुलाई 2020 को आयोजित चतुर्थ एवं अंतिम सत्र में डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता, (संकाय प्रभारी, हिंदी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. रोपड़) ने श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक का धन्यवाद ज्ञापित किया और सभी प्रशिक्षणार्थियों को आगामी नवंबर माह में होनेवाली परीक्षा के लिए शुभकामनाएं दी साथ ही डॉ. गिरीश कठाणे, हिंदी अनुवादक का आतंरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन करने हेतु अभिनंदन किया।

श्री लगवीश कुमार, हिंदी अधिकारी, भा.प्रौ.सं. रोपड़ के मार्गदर्शन में इस चार दिवसीय आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

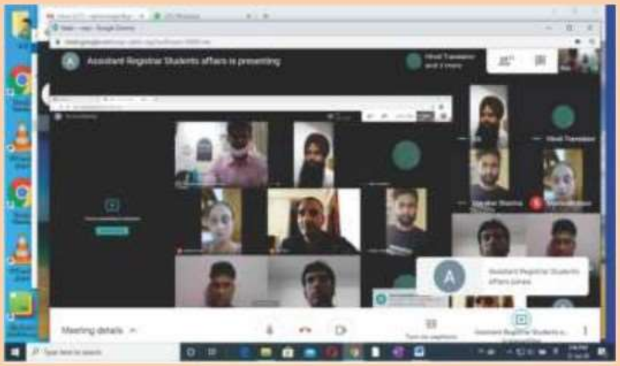

आंतरिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का लाभ लेते हुए प्रशिक्षणार्थी

प्रशिक्षणार्थी अपने द्वारा किए गए अभ्यास की प्रशिक्षक महोदय द्वारा पुष्टि करते हुए

भारत के 74वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर ऑनलाइन देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन

हिंदी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने भारत के 74वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया। यह प्रतियोगिता ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में संस्थान के सभी स्तरों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

इस प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागी विद्यार्थी एवं कर्मचारिगणों ने अपने देशभक्ति से ओत–प्रोत गीतों की प्रस्तुति के माध्यम से पूरा वातावरण देशभक्तिमय कर दिया। हिंदी प्रकोष्ठ प्रति वर्ष स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन करता है।

इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों में सुश्री अपूर्वा शेखर (पीए.डी शोधार्थी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग) को प्रथम पुरस्कार, श्री नवनीत मिश्रा (पीएच.डी शोधार्थी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग) को द्वितीय पुरस्कार, श्री प्रणव जोहरी (पीएच.डी शोधार्थी, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग) को तृतीय पुरस्कार, सुश्री नीलम (पीएच.डी शोधार्थी, रसायन विभाग) को प्रथम प्रोत्साहन पुरस्कार, तथा श्री अमन सिंह कुशवाहा (विद्यार्थी, कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग) को द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

इसी प्रकार से कर्मचारियों में श्री तरविंदर सिंह हांडा (पुस्तकालय सूचना अधिकारी, केन्द्रीय पुस्तकालय) को प्रथम पुरस्कार, श्री गगनदीप सिंह (कार्यालय सहायक, कार्य एवं संपदा) और सुश्री पूनम कटारिया (वरिष्ठ सहायक, रसायन विभाग) को संयुक्त रुप से द्वितीय पुरस्कार, श्री गगनदीप सिंह (कनिष्ठ सहायक–लेखा, लेखा अनुभाग) और श्री विपिन कुमार (लेखा अधिकारी, लेखा अनुभाग) को संयुक्त रुप से तृतीय पुरस्कार, श्री नरिंदर कुमार (कार्यालय सहायक, निर्माण प्रबंधन समूह/सीएमजी) को प्रथम प्रोत्साहन पुरस्कार तथा श्री गौरव दत्ता (कनिष्ठ लेखा अधिकारी, लेखापरीक्षा अनुभाग) को द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

इस प्रतियोगिता के मूल्यांकन हेतु परीक्षक के रुप में गणित विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अरुण कुमार तथा रसायन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. मनोज कुमार पाण्डेय आमंत्रित थे।

ऑनलाइन देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता को समाप्ति की ओर ले जाते हुए हिंदी प्रकोष्ठ के संकाय प्रभारी डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता इन्होंने सभी प्रतिभागियों का ऑनलाइन माध्यम से अपने गीतों की उत्कृष्ट प्रस्तुति हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही इस प्रतियोगिता के परीक्षक मंडल का भी धन्यवाद ज्ञापित किया और इस प्रतियोगिता के सुचारु एवं सफल संचालन हेतु डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे, हिंदी अनुवादक का अभिनंदन किया।

श्री लगवीश कुमार, हिंदी अधिकारी, भा.प्रौ.सं. रोपड़ के मार्गदर्शन में इस ऑनलाइन देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

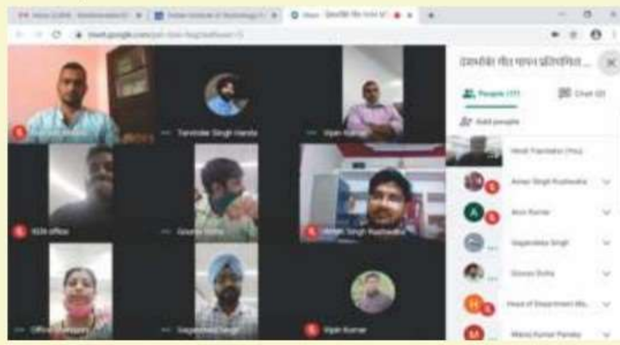

अपने गीतों की प्रस्तुति करते हुए विद्यार्थी तथा कर्मचारिगण

नराकास रुपनगर की बैठक में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास मुख्य वक्ता के रुप में

दिनांक 21 अगस्त 2020 को नराकास रुपनगर की अर्धवार्षिक बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास को मुख्य वक्ता के रुप में आमंत्रित किया गया था। इस बैठक में प्रो. सरित कुमार दास जी के साथ श्रीमती सोनाली गिरी, उपायुक्त, रुपनगर मुख्य अतिथि के रुप में तथा श्री कुमार पाल शर्मा, उपनिदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार विशेष आमंत्रित के रुप में बैठक में सम्मिलित हुए।

नराकास रुपनगर की अर्धवार्षिक बैठक के कुछ क्षण

बैठक के दौरान अपने विचार साझा करते हुए प्रो. सरित कुमार दास, निदेशक, भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न पहलुओं और विशेषताओं पर प्रकाश डाला और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति किस प्रकार नए भारत के निर्माण में प्रासंगिक है इस बिंदू पर सभी का मार्गदर्शन किया। प्रो. दास ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति किस प्रकार से क्षेत्रीय भाषाओं के विकास और संवर्धन में महती भूमिका निभाएगी इस पर भी अपने विचार रखें। प्रो. दास ने अपने पूरे व्याख्यान में इस बात पर विशेष रुप से बल दिया कि राजभाषा हिंदी के विकास और इसके निर्धारित लक्ष्यों का मार्ग निश्चित रुप से क्षेत्रीय भाषाओं के विकास और संवर्धन से ही गुजरकर जाता है।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती समारोह का ऑनलाइन आयोजन

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर दिनांक 01 अक्तुबर 2020 को संस्थान में आनलाइन समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर भा.प्रौ.सं. रोपड़ के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास ने महात्मा गांधी जी के जीवन तथा जीवन–मूल्यों को किस प्रकार अपने दैनिक कार्यों में लाना चाहिए इस पर विचार रखें।

अपने विचार साझा करते हुए प्रो. सरित कुमार दास ने कहा कि कोई भी कार्य करते हुए नीयत, उद्यम और ईमानदारी नामक तीन तत्व एक अनन्यसाधारण महत्व रखते है।

प्रो. दास ने यह बताया कि महात्मा गांधी महात्मा इसीलिए कहलाएं क्योंकि उन्होंने अपने लक्ष्य की सफलता को जितना महत्व दिया उतना ही महत्व मानव–मूल्यों को दिया। प्रो. दास ने कहा कि महात्मा गांधी जी ने मानव–मूल्यों को संरक्षित रखते हुए स्वतंत्रता आंदोलन की मशाल जलाए रखी।

प्रो. दास ने कहा कि महात्मा गांधी जी का अगर पूरा जीवन क्रम देखा जाएं तो हम पाएंगे कि उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक अच्छा आदमी होने के लिए जितना बुद्धिजीवी होना आवश्यक है उससे भी ज्यादा एक ईमानदार व्यक्ति होना जरुरी है। और आज पूरे विश्व को ऐसे ही ईमानदार व्यक्तियों की आवश्यकता है।

अपने संबोधन में प्रो. दास ने कहा कि महात्मा गांधी जी इतने वर्षों के बाद भी प्रासंगिक इसीलिए है क्योंकि उन्होने उद्देश्यों की प्राप्ति में उपरोक्त तीनों तत्वों अर्थात नीयत, उद्यम और ईमानदारी को सर्वोपरी रखा। साथ ही उन्होने सभी से अपील की कि स्व–लाभ हेतु कभी भी ईमानदारी से समझौता नहीं करना चाहिए।

प्रो. सरित कुमार दास, निदेशक, भा.प्रौ.सं रोपड़ संस्थान सदस्यों को संबोधित करते हुए

इस अवसर पर संस्थान के कार्यवाहक कुलसचिव श्री रविंदर कुमार ने गांधीजी के मूल्यों से प्रेरणा लेकर अपने लक्ष्यों को पूर्ण करने का आग्रह किया। साथ ही 150वीं गांधी जयंती के उपलक्ष्य आयोजित की गई भाषण प्रतियोगिता के परिणाम की भी घोषणा की। संकाय सदस्य एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित हिंदी भाषण प्रतियोगिता में डॉ. अभिषेक तिवारी को प्रथम पुरस्कार, श्री हरमित सिंह ढिल्लोन को द्वितीय पुरस्कार तथा श्री संजीव कुमार भारद्वाज को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। विद्यार्थियों के लिए आयोजित भाषण प्रतियोगिता में श्री अक्षर त्रिपाठी को प्रथम पुरस्कार, श्री आयुष प्रताप को द्वितीय पुरस्कार तथा श्री अश्वनी कुमार राणा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

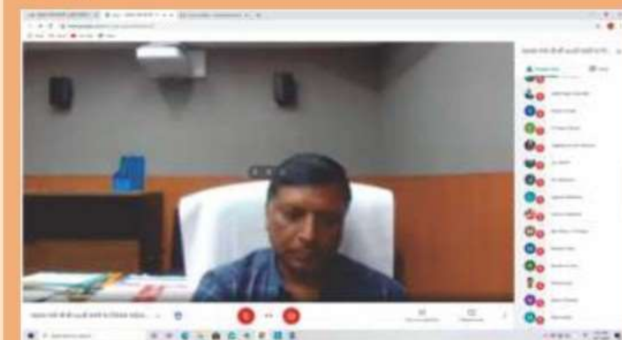

श्री रविंदर कुमार, कार्यवाहक कुलसचिव, भा.प्रौ.सं. रोपड़ विजेताओं के नामों की घोषणा और धन्यवाद ज्ञापन करते हुए

श्री पुनीत गर्ग, सहायक कुलसचिव महोदय ने इस अवसर पर प्रो. सरित कुमार दास, श्री रविंदर कुमार और सभी उपस्थितों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. अरुण कुमार, सहायक प्राध्यापक ने किया।

आनलाइन जयंती समारोह में सहभागी श्रोतागण।

समाचारपत्रों में गांधी जयंती की कवरेज

आई आई टी रोपड़ में महात्मा गांधी को किया याद

अमर उजाला

आम आदमी पार्टी की कृषि कानूनों के विरोध में हस्ताक्षर मुहिम शुरू

रोपड़ • महात्मा गांधी के जीवन से प्रेरणा ले लक्ष्य करें पूरे : प्रो. सरित

हिन्दी पत्रिका

नराकास, रुपनगर हेतु ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन : दिनांक 18 दिसंबर, 2020

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ ने नाइलिट (NIELIT), रुपनगर के साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति रुपनगर के संयुक्त तत्वावधान में नराकास रुपनगर के सभी सदस्य कार्यालयों के लिए **"सूचना प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में यूनिकोड की महत्ता (हिंदी टाइपिंग के विशेष संदर्भ में)"** विषय पर दिनांक 18 दिसंबर, 2020 को आनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया।

इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता एवं प्रशिक्षक रुप में श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक, हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण केन्द्र, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, चण्डीगढ़ केन्द्र को विशेष रुप से आमंत्रित किया गया था।

इस ऑनलाइन कार्यशाला का आरंभ आई.आई.टी. रोपड़ के हिंदी अधिकारी/संयुक्त कुलसचिव श्री लगवीश कुमार द्वारा औपचारिक स्वागत भाषण से हुआ। श्री लगवीश कुमार ने कार्यशाला हेतु वक्ता एवं प्रशिक्षक रुप में आमंत्रित श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक महोदय का स्वागत किया। साथ ही, नराकास रुपनगर के अध्यक्ष श्री आर. के. जसरोटिया, नराकास रुपनगर तथा सभी सदस्य कार्यालयों के सहभागियों का भी हार्दिक स्वागत किया।

श्री आर. के. जसरोटिया, अध्यक्ष, नराकास रुपनगर ने अपनी आरंभिक टिप्पणी में सभी सहभागियों से इस कार्यशाला का भरपूर लाभ लेने की बात कहीं और आई.आई.टी. रोपड़ और नाइलिट रुपनगर को इस आयोजन हेतु अपनी शुभकामनाएं दी।

इस ऑनलाइन कार्यशाला के वक्ता/प्रशिक्षक श्री अरविंद कुमार ने सभी सहभागियों के साथ सूचना प्रौद्योगिकी और राजभाषा हिंदी का विकास पर अपनी बात रखते हुए पॉवर पॉइंट प्रस्तुति से हिंदी टाइपिंग के विभिन्न टूल्स के संबंध में सभी को अवगत कराया और उनका अभ्यास भी कराया।

कार्यशाला का समापन करते हुए डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता, संकाय प्रभारी (हिंदी), आई आई टी रोपड़ ने श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक महोदय का कार्यशाला में पधारकर सभी को मार्गदर्शित करने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही नराकास रुपनगर के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों, सहभागी सदस्यगणों का भी धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यशाला का संचालन आई आई टी रोपड़ के हिंदी अनुवादक डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे ने किया।

ऑनलाइन अल्पकालिक गहन हिंदी कार्यशालाओं में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के कुल 62 सदस्यों की सहभागिता

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण एकक द्वारा दिनांक 20 जुलाई 2020 से दिनांक 06 नवंबर 2020 तक आयोजित किए गए कुल 05 सत्रों में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के कुल 62 कर्मचारियों ने आनलाइन अल्पकालिक गहन हिंदी कार्यशाला का लाभ लिया। विभिन्न सत्रों में आयोजित यह कार्यशाला हिंदी में कार्य करते हुए होनेवाली झिझक को दूर करने और अधिक से अधिक कार्यालयीन पत्राचार हिंदी में करने हेतु मार्गदर्शन आदि बिंदूओं को समाहित किए हुए थी।

कार्यशाला सं. 498 (20 जुलाई से 24 जुलाई 2020)	श्री पुनीत गर्ग, सहायक कुलसचिव श्री रविंदर सिंह, वरिष्ठ सहायक श्री अमित कुमार, तकनीकी अधीक्षक सुश्री पूनम कटारिया, वरिष्ठ सहायक श्री दिवाकर शर्मा, वरिष्ठ सहायक श्री विकास कौशिक, वरिष्ठ सहायक श्री दलजीत सिंह सैनी, वरिष्ठ लेखाकार सुश्री रुबल बत्ता, कनिष्ठ सहायक	सुश्री पूनम, वरिष्ठ सहायक श्री विकास, भेषजज्ञ सुश्री शीतल भोला, कनिष्ठ सहायक श्री सुमित राणा, कनिष्ठ सहायक श्री आशीष गौर, कनिष्ठ सहायक श्री टी.एस. आनंद, कार्यपालक अभियंता डॉ. दिनेश के. एस., पुस्तकालयाध्यक्ष
कार्यशाला सं. 499 (03 अगस्त से 07 अगस्त 2020)	श्री पुनीत गोयल, उपकुलसचिव श्री अजीत पाल सिंह, खेल अधिकारी सुश्री अमृता भट्टाचार्या, पुस्त. सू. अधि. सुश्री परविंदर कौर, कनिष्ठ सहायक श्री सरबजीत सिंह, कनिष्ठ परिचारक सुश्री मनदीप कौर, कनिष्ठ सहायक श्री रिषभ सेमवाल, कनि. प्रयो. सहायक सुश्री जसप्रीत कौर, कनिष्ठ सहायक	श्री गुरदीप सिंह, कनिष्ठ अधीक्षक श्री मनोज कुमार, कनिष्ठ सहायक सुश्री रीतिका, कनिष्ठ अधीक्षक श्री जसदीप सिंह, कनिष्ठ सहायक सुश्री भावना भाटिया, कनिष्ठ सहायक श्री अनिल कुमार, कनि. प्रयो. सहायक श्री साहिल कपूर, कनिष्ठ परिचारक
कार्यशाला सं. 500 (07 सितंबर से 11 सितंबर 2020)	डॉ. चरणजीत सिंह, स्वास्थ्य अधिकारी श्री गौतम शर्मा, सहायक कुलसचिव श्री विनित जामवाल, पुस्त. सू. सहायक श्री अर्पित गुप्ता, कनि. प्रयो. सहायक श्री करमवीर सिंह, कनिष्ठ सहायक लेखा	सुश्री सानू उस्मानी, कनिष्ठ सहायक मो अनजारुल हक, कनिष्ठ सहायक श्री ललित कुमार, कनि. लेखा अधिकारी सुश्री अमृत कौर, वरिष्ठ सहायक श्री रविंदर कुमार, वरिष्ठ सहायक
कार्यशाला सं. 501 (21 सितंबर से 25 सितंबर 2020)	श्री देवेन्द्र कुमार, कनि. प्रयो. सहायक श्री कमल जीत सिंह, कनि. तक. अधीक्षक श्री जसप्रीत सिंह, कनि. परिचारक श्री राज कुमार मीणा, कनि. प्रयो. सहायक श्री सुखविंदर सिंह, वरि. प्रयो. सहायक	श्री पुनीत कुमार, कनि. प्रयो. सहायक श्री हेमन्त कुमार, कनि. प्रयो. सहायक सुश्री दिलजीत कौर, स्टाफ नर्स श्री रुपिंदर सिंह मुन्द्रा, वरि. प्रयो. सहायक श्री दमनिंदर सिंह, कनि. तक. अधीक्षक
कार्यशाला सं. 502 (02 नवंबर से 06 नवंबर 2020)	श्री अवतार सिंह, कनि. प्रयो. सहायक श्री दिलबाग सिंह, कनि. प्रयो. सहायक श्री रामबीर सिंह, कनि. तक. अधीक्षक सुश्री पूजा पाण्डेय, कनि. प्रयो. सहायक श्री अमित कौशल, कनि. तक. अधीक्षक श्री प्रमोद कुमार दुबे, कनिष्ठ अधीक्षक	श्री गौरव दत्ता, कनि. लेखा अधिकारी श्री जितेंदर पाल, कनिष्ठ अधीक्षक श्री संदीप सिंह, कनिष्ठ सहायक श्री संतोष देवगम, कनिष्ठ सहायक सुश्री नेहा डण्ढारे, कनिष्ठ सहायक

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण पत्राचार पाठ्यक्रम की परीक्षा का आयोजन: भा.प्रौ.सं. रोपड़ परीक्षा केन्द्र के रुप में

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान नई दिल्ली द्वारा हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण पत्राचार पाठ्यक्रम प्रशिक्षण के 59वें सत्र (अवधिः—फरवरी 2020 से जुलाई 2020) की परीक्षा हेतु भा.प्रौ.सं. रोपड़ को परीक्षा केन्द्र के रुप में सुनिश्चित किया गया। यह परीक्षा भा.प्रौ.सं. रोपड़ में दिनांक 03 नवंबर 2020 को संपन्न की गई। श्री लगवीश कुमार, संयुक्त कुलसचिव एवं हिंदी अधिकारी ने इस परीक्षा केन्द्र के केन्द्र अधीक्षक के रुप में अपने दायित्व का निर्वहन किया।

अभिनंदन

भा.प्रौ.सं. रोपड़ के तीन कर्मचारिगण हिंदी टाइपिंग परीक्षा में प्रथम विशेष श्रेणी में उत्तीर्ण

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किए गए हिंदी शब्द संसाधन (हिंदी टंकण) पत्राचार प्रशिक्षण कार्यक्रम (59वां सत्र) (अवधि 01 फरवरी 2020 से माह जुलाई 2020) की दिनांक 03 नवंबर 2020 को संपन्न परीक्षा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के निम्न 03 सदस्य विशेष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए:-

श्री दिवाकर शर्मा
वरिष्ठ सहायक
भंडार एवं क्रय अनुभाग

श्री गुरदीप सिंह
कनिष्ठ अधीक्षक
विद्यार्थी मामले अनुभाग

श्री पुनीत गर्ग
सहायक कुलसचिव
विद्यार्थी मामले अनुभाग

इसी के साथ वर्तमान तक संस्थान के 10 सदस्य इस प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक संपन्न एवं उत्तीर्ण कर चुके है।

साथ ही हिंदी शब्द संसाधन एवं हिदी टंकण पत्राचार प्रशिक्षण सत्र 01 फरवरी 2021 से जुलाई 2021 हेतु 23 सदस्यों का नामांकन केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को प्रेषित किया गया है।

संकाय की कलम से......।

धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी का महत्व

हमारे आस-पास कितनी ऐसी रोजमर्रा की वस्तुएँ हैं, जिन्हें हम अनायास ही उपयोग में लाते है, पर ये नहीं जानते कि उनके निर्माण में विज्ञान और अभियांत्रिकी का कितना योगदान है। दाँतों को साफ करने वाला ब्रश, जो कि कठोर या कोमल हो सकता है.... जो मुड़ जाता हैं, या दिवाली में लगने वाला पेन्ट, जो जंगरोधक होता है, या वो स्टेनलेश स्टील का ब्लेड, जिसे हम शेविंग या अन्य कई कार्यो में उपयोग में लाते है, इन सब के निर्माण में पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी की बहुत वर्षो की शोध एवं तकनीक शामिल है।

टूथब्रश का पौलिमर, या स्टेनलेस इस्पात का ब्लेड पहले पदार्थ के रुप में निर्मित होदता है। इस निर्माण कार्य की अभियांत्रिकी यह तय करती है कि ब्रश कोमल होगा या कठोर एवं ब्लेड स्टेनलेश यानि जंगरहित होगा या नहीं। इसके बाद ब्लेड की धार एवं उसके अंतिम स्वरुप के निर्माण में अन्य कई तकनीकियाँ एवं विज्ञान शामिल है।

मानव इतिहास को यदि क्रमगत रुप से दर्शाया जाएं, तो इसकी शुरुवात होती है पाषाण युग से और फिर आता है लौह, ताम्र एवं कास्यं युग। इन युगों के नामों से यह प्रत्यक्ष है कि धातु का मानव सभ्यता पर कितना प्रभाव है। सभ्यता में किसी भी प्रकार का उत्थान धातु एवं पदार्थ अभियांत्रिकी के बिना असम्भव है। जब मनुष्य शिकारी था तो हथियार, कृषक बना तो खेत जोतने के लिए हल और अन्य अवजारों तथा कालांतर में विभिन्न षि एवं अन्य क्षेत्रों से संबंधित विभिन्न आवश्यकताओं के लिए पदार्थ अभियांत्रिकी एवं धातुकी में उत्थान स्वाभाविक था।

कबीर लिखते है-

''दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की श्वास सों, सार भसम ह्वे जाय।।"

उक्त दोहे में कबीर चमड़े (खाल) एवं लोहे (सार) के उदाहरण से अपनी बात रखते हुए लोहे को गर्म कर उसे रुप देने की प्रक्रिया को भी प्रस्तुत करते हैं। यह धातुकी अभियांत्रिकी का सामाजिक प्रभाव दर्शाता है, क्योंकि कबीर किसी बात को समझाने के लिए इस उदाहरण का उपयोग करते हैं।

आधुनिक युग में मानव की आवश्यकताओं ने न सिर्फ धातु बल्कि अन्य पदार्थो जैसे प्लास्टिक (नाइलोन, पौलिथिन इत्यादि), जैविक पदार्थ (स्पंज, हड्डियां) एवं सेरामिक्स (अल्युमिना, चूना, ग्रेफाइट, इत्यादी) की महत्ता स्वास्थ्य, खेलकूद, सड़के, परिवहन, षि एवं उद्योग सम्बन्धी क्षेत्रों में समझी है और कई नए उत्पाद भी दिए हैं।

सुधा चन्द्रन का प्रोस्थेटिक पैर, शांति स्वरुप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित भाभा कवच, नाभिकीय पन्डुब्बी अरिहंत एवं मंगलयान और चन्द्रयान में सम्मिलित उत्पाद धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी के योगदान के कुछ प्रसिद्ध उदाहण हैं।

धातुकी का तात्पर्य धातु के अयस्क से उसकी वस्तुएं बनाने तक की यात्रा से है। अयस्क को सान्द्र बनाना, धातु के इस सान्द्र से अनावश्यक एवं हानिकार पदार्थो को निकालना, इसे ठोस रुप देना, तत्पश्चात् उसे वांछित रुप में ढालना धातुकी अभियांत्रिकी का हिस्सा है।

पदार्थ अभियांत्रिकी पदार्थो के कई आयामों की तकनीकियां सिखाता है। उदाहरण के लिए जहाजों में उपयोग में लाए जाने वाले धातु पर समुद्री जल के कारण होने वाला क्षरण, लगाये गए बल के फलस्वरुप पदार्थों में होने वाला प्रतिवर्ती या अप्रतिवर्ती बदलाव का अध्ययन पदार्थ अभियांत्रिकी का अध्ययन एवं अनुसंधान का क्षेत्र है।

धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी अकेली ऐसी विधा है जिसमें विज्ञान एवं अभियांत्रिकी की हर शाखा सम्मिलित है। विद्युतीय पदार्थ, चुम्बकीय पदार्थ, अंतरिक्ष यानों में उपयोग से लेकर नालों के पाइप सभी इसके अंतर्गत सिखाये जाते हैं।

अभियांत्रिकी की इस शाखा में संगणकों का इस्तेमाल भी होता है एवं संगणकों के निर्माण में भी पदार्थ अभियांत्रिकी का अनमोल योगदान है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ में धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी एक अपेक्षाकृत नई शाखा है, जिसमें विभिन्न विषयों पर शोध करने वाले कुल सात उप-प्राध्यापक कार्यरत हैं।

कोविड-19 के आपदा-काल में, भा.प्रौ.सं. रोपड़ के धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग ने (U.V.) सेफ नामक उत्पाद के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। यह उत्पाद पराबैगनी किरणों द्वारा कोविड-19 एवं अन्य विषाणुओं से सुरक्षा देने में सक्षम है।

आशा हैं कि निकटतम् भविष्य में धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी अन्य कई उत्पादों के निर्माण एवं अपने अनुसंधान निष्पत्तियों के माध्यम से मानव सभ्यता के उत्थान एवं विकास में भरसक योगदान देकर राष्ट्र एवं मानवजाति के प्रति अपनी कर्तव्य-निष्ठा को पुन: दर्ज कराएगा।

डॉ. अभिषेक तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग
भा.प्रौ.सं. रोपड़
ई-मेल: abhishek.tiwari@iitrpr.ac.in

जिन्दगी तुम खूबसूरत हो

जिन्दगी तुम खूबसूरत हो
मानो किसी शिल्पकार की मूरत हो
कभी हँस पड़ती हो खिलखिलाकर,
किसी बच्चे की तरह
तो कभी गुम–सी हो जाती हो बिल्कुल
निराशा भरे मन में आशा की तरह
कभी नव–वधू की भाँति लजाते हुए मुस्कुरा देती हो
तो अगले ही पल होने पर स्वातन्त्र्य का हनन
झट सारे वायदे ठुकरा देती हो
क्या उपमा दूँ मैं तुम्हें?
तुम अतुल्य व हर बदलाव की नियति हो
जिन्दगी! तुम खूबसूरत हो।

जो हार रहा हो जीवन रण में
पनप रही हो शिथिलता जिसके प्रण में
ढूढ़ रहा हो जो खुशियाँ हर क्षण में
हो जो खोया दुविधा के गलियारों में,
या पा भी जाए वो शिव, जो बसे कण–कण में
तपिस हो सूरज की या फिर शीतलता शशि की,
तुम हर निमिष की जरूरत हो
जिन्दगी! तुम खूबसूरत हो।

टकरा गया आज एक बच्चा फुटपाथ पर
नहीं था वस्त्र जिसके गात पर
सहसा हमारी नजरें मिली फिर मुस्कानें भी
बस ऐसी ही आकस्मिक हँसी की झलक हो
कवि की कल्पना व लेखक की प्रेरणा से उपजी
बेपरवाह–सी कृति की उलझी–सी अलक हो
जिन्दगी! तुम खूबसूरत हो।

कात्यायनी तिवारी
पीएच.डी.शोधार्थी,
भौतिक विभाग

अपनी आंखों से कहो

अपनी आंखों से कहो कि पहरा ना करे।
तेरी यादें पास आकर मेरे ठहरा ना करे।
चलो यह ठीक है कि वो अब मेरी नहीं पर,
देखकर मुझे संग दूसरों के, वो झगड़ा ना करे।

शौक हमने भी पाले हैं बहुत, गुरूर मुझे भी खुद पर है।
बस चाहता हूं कि सारे जहां को वो अपना चेहरा ना करे।
उससे मिलने की उम्मीद तो छोड़ दी है मैंने पर,
बस मुझे पुकारती रहे, बिना आवाज के अपने मुझे बहरा ना करे।

उसके होश उड़ा देने के हुनर से वाकिब हैं हम भी,
रहम करे मुझपर, मरे हुए पर वो वार दूसरा ना करे।
भूल जाए मुझे और मुझे भी उसे भुलाने दे,
यूं नींदों में आकर बार – बार, जख्म गहरा ना करे।

जमाने में मोहब्बत के हमने भी देखे हैं नखरे बहुत।
दिल लगाने का अब मुझसे कोई मशवरा ना करे।
खुदा के बनाए नायाब चीज बहुत हैं जहां में पर,
अगर दिल दे तो बड़ा दे,
किसी का दिल खुदा इतना संकरा ना करे।

राकेश कुमार "पंकज"
पीएच.डी. शोधार्थी,
मानविकी एवं सामाजिक
विज्ञान विभाग

उम्मीद

देखता हूं जब दूर दूर तक
गाँव में नजरें उठाकर,
नही दिखता कोई नौजवान
सब गये हुए हैं,

एक आशा और उम्मीद लेकर
शिक्षा और रोजगार के लिए
टिकी हैं वो निगाहें
माँ—बाबू जी की आशा
सोचता हूँ जब ये तो
भर आती हैं आंखें

कैसी व्यवस्था ये लचर है,
मजबूर है युवा
करने को पलायन,
दूजा कोई नही चारा
आखिर माँ बाबू जी की है वो उम्मीद।

शोभित गुप्ता
एम.एस.सी., विद्यार्थी
भौतिक विभाग

आत्मविश्वास

हर रात दिन तेरे काले होंगे
और घनघोर अंधेरा छाएगा।
लोग हंस पड़ेंगे तुझपे
जब तू राहों पर डगमगाएगा।

वक्त वही होगा कुछ कर दिखाने का
जब तू मन से हार मान जाएगा
मेहनत के इन कांटों पर
तू जितना लहू बहायेगा

घाव तेरे परिपक्व होंगे
एक दिन ऐसा आएगा
आत्मविश्वास का सब खेल है प्यारे
जो इसे जीता वही सिकंदर कहलाएगा।

प्रशांत यादव
एम.एस.सी., विद्यार्थी
भौतिक विभाग

मैं उसी का अंश हूँ

मैं ज्वाल हूँ त्रिनेत्र की, ॐ का नाद हूँ
चक्र हूँ हरी का, डमरू का निनाद हूँ
मैं ही पीताम्बर का पीत रंग
मैं ही महादेव का अर्ध अंग
मैं ही सृजन हूँ मैं ही विध्वंश हूँ
मैं उसी का अंश हूँ

मैं शंकर का अद्वैत, मैं ही गोरख का तंत्र हूँ
मैं ही गायत्री जाप हूँ, मृत्युंजय महामंत्र हूँ
मैं ही बुद्ध का अष्टांग मार्ग
मैं युद्धभूमि में खड़ा पार्थ
मैं सुर्यवंश, कुरुवंश और हरिवंश हूँ
मैं उसी का अंश हूँ

मैं चीख हूँ हरप्पा की,सरस्वती का प्रमाण हूँ
मैं हुंकार हूँ राणा की,गुरु तेग का कृपाण हूँ
मैं ही गाता कबीर नानक के छंद
मुझ में लय बुल्ले खुसरो के बंद

मैं ही वो ग्वाल हूँ
और मैं ही कंस हूँ
मैं उसी का अंश हूँ।

नारायण एस. अधिकारी
एम.एस.सी., विद्यार्थी
भौतिक विभाग

माँ की दुआ बाकी है

अभी मेरे दिल में धधकती सी आग बाकी है,
अभी मेरे जिस्म की थोड़ी राख बाकी है,
ना ही डरा हूँ मैं, ना ही थका हूँ मैं,
मुझे पता है अभी मेरी मंजिल की राह बाकी है,
मुझे मेरी कब्र तक पहुंचाने वाले सुन लो,
सुन लो कि अभी मरा नहीं हूँ मैं,
अभी मेरे साथ मेरी माँ की दुआ बाकी है।

निखिल
एम.एस.सी., विद्यार्थी
रसायन विज्ञान विभाग

"दिल-ए-नज़्म"

दिल में जो है,
कह जाना ही अच्छा है!
उन अश्कों का,
बह जाना ही अच्छा है।

टूटा है सपना तो क्या!
टूट जाने दे.... ये जिंदगी है....
अंजना ही अच्छा है।

मिल कर दर्द दे गया...
कोई जिंदगी भर की।
इससे बेहतर तो वो ....!
बेगाना ही अच्छा है।

मुद्दतों से इश्क से दूर हूँ मैं,
पर अब लगता है...
की कोई पागल, प्रेमी,
दीवाना ही अच्छा है।
और......

मेरी रौशनी से...
सब जलते है जनाब!
मुझे शाम के पहले...
ढल जाना ही अच्छा है।
" ये दिल–ए–नज्म है... ।"

आयुष प्रताप (आयु)
पीएच. डी. शोधार्थी,
धातुकर्म और सामग्री
इंजीनियरिंग विभाग

कोरोना

मौसम कितना सुहाना है।
लगता है कोरोना का जमाना है।।
लॉकडाउन को निभाना है।
घर पर रह कर ही
दुनिया को बचाना है।।

कोरोना कोरोना हायरे करोना।
कैसा यह तेरा सितम से कम करोना।
भूलकर सारी मिथ्या।
याद आई अपने यारों की गाथा।।

चल रही है पुरानी रीत।
कर रहे हैं लोग नमस्ते और गीत।।
प्राकृतिक आपदा है, आसानी से जाएगा नहीं।
हे मानव अब तो सुनो, पेड़ पौधों को सताओ नहीं।।

सुंदर करो मन को,
सजाओ अपने घर को।
बुद्धि से काम लो, जीवन ने
दूसरा मौका दिया है उसे थाम लो।।

यह लॉक डाउन नहीं, सबक है।
सीख लो इससे,
छोड़ दो असल की अभिलाषा।।
बंद करो काटना,
साथ कर लो अपनों को,
सीख लो बाँटना।

आदित्य राज वर्णवाल
प्रौद्यो. निष्णात, प्रथम वर्ष
कंप्यूटर विज्ञान विभाग

हमारा गौरवः भारतीय सेना

आज फिर किसी ने मेरी लम्बी उम्र के लिए व्रत किया है
आज फिर किसी ने मेरी सलामती के लिए व्रत किया है
आज फिर किसी ने मेरी फोटो को देख के ही खाना खाया है
आज फिर किसी ने अपना पत्थर दिल कर के दिवाली साथ
मानाने का वादा करवाया है

आज फिर किसी ने बहुत मुश्किल से बच्चो को समझाया है
की आज हम और हमारा देश खुशी खुशी दिवाली मना ले
इसीलिए तो आज तुम्हारा पिता सरहद पर जागा है
आज फिर उस माँ ने अपने दिल को यह कर कर समझाया है
की आज मेरा बेटा अपनी मातृभूमि के लिए ही
तो सरहद पर जागा है

अमर रहे इस मातृभूमि के वो लाल
जिन्होंने अपने लहू मातृभूमि के लिए बहाया है
जिन्होंने हस्ते हस्ते हर दर्द सहा और
मातृभूमि की लाज को बचाया है
सम्मान करो उन वीरों का
जिन्होंने आज फिर हमें आजादी से
दिवाली मानाने का ये मौका फरमाया है
धन्यवाद करो उन वीरों का जिन्होंने
आज भी सरहद पर रहकर
हमें सुरक्षित महसूस करवाया है।

चंद्रशेखर (आंवला)
पीएच.डी. शोधार्थी,
रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग

यादें

यादों के वो बीते पल,
वर्तमान के झुर्मठ से झांकते हुए,
रेतीली हवाओं के साथ ठंडे झोंके हमें,
उन पलों का एहसास कराते हैं जब हमने कुछ खोया, कुछ पाया,
उन गमों से रूबरू करवाते हैं जिनसे हमने आगे बढ़ने की प्रेरणा ली।
ये यादें,
जिनमें संजोई होती है हमारी बीती जिन्दगी,
जिनमें मोतियों सी पिरोई होती हैं हमारी आशाएं हमारी उम्मीदें,
ये यादें,
जिनके सुनहले पन्नों में हमारी अतीत
की खुली किताब छपी होती है।
अच्छे और बुरे का,
सच और झूठ का,
हमारे आचरण का बोध कराती हुई हमारी यादें,
जिन पर समय अपनी छाप छोड़ देता है....
और हमें एहसास कराती हुई यादें,
हमारे उन अल्हड़ और मासूम लम्हों की यादें,
जो प्रेरणा हैं हमारी,
जिनके दम पर ये तूफानों से भरी
जिन्दगी के समुंदर में इंसान खुश होता है।
हमारी जिन्दगी में रची – बसी ये यादें,
जो हमारी हैं, सिर्फ हमारी।

अक्षर त्रिपाठी
पीएच.डी. शोधार्थी
सिविल इंजीनियरिंग विभाग

विश्व पर गहराते दोहरे संकट - प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन

यूँ तो विश्व अभी संकट के दौर से गुजर रहा है। एक तरफ कोरोना वैश्विक महामारी को जड़ से खत्म करने का अभी भी कोई पूर्णतया कारगर उपाय हमें प्राप्त हुआ नहीं है, दूसरी तरफ कई आर्थिक चुनौतियाँ भविष्य के लिए तैयार हो गयी है। ऐसे में ये स्वाभाविक है कि सरकारों एवं नागरिकों का समूचा ध्यान केवल इन संकटों से जूझने में ही केंद्रित हो। पर हमें भूलना नहीं चाहिए कि कई दशकों से विश्व दो और भयावह चुनैतियों का सामना कर रहा है। जिसमें पहला है जीवाश्म ईंधनों के निरंतर उपयोग से हुए प्रदुषण कि वातावरण को खोखला कर दिया है और दूसरा वैश्विक तापमान में लगातार वृद्धि तथा उससे हो रहे जलवायु परिवर्तन से विश्व एक ''पॉइंट ऑफ नोरिटर्न'' की तरफ तेजी से बढ़ता जाना है।

बहु–आयामी प्रदूषण

प्रदूषण के कारण वायु, जल और भूमि जैसी हमारी अमुल्य प्राकृतिक संपदाएं अपनी स्वाभाविक स्वछ्ता की स्थिति खो रही है। कारखानों और मोटरगाड़ियों के धुएं से वायु में पार्टिकुलेट मैटर (Particulate Matter) और खतरनाक गैसें घुल गयी है। पिछले कुछ वर्षों से ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि अवशेष का जलानाभी प्रदुषण का एक कारण बन गया है। इन सभी कारणों का समुचित प्रभाव यह पड़ रहा है कि शहरों का वायु गुणवत्ता सूचकांक (Air quality index) वर्ष–दर–वर्ष गिरता जा रहा है और खतरनाक स्थिति में पहुंच गया है। अनुपचारित ठोस अपशिष्ट (Untreated solid waste) तथा भारी धातु (Heavy metals)–युक्त कारखानों के रसायन नदियों में प्रवाहित कर दिए जाते हैं जिससे नदियों का जल निर्मल नहीं रहता। उसमें कॉलिफोर्म (Coliform) और इ.कोलाई (E-Coli) जैसे हानिकारक जीवाणु पनपने लगते है। निर्माण डेबरी (Construction debris) को नदियों में फेंक देने से नदियों का अविरल प्रवाह बाधित हो जाता है। खेती में काम में लाये जाने वाले उर्वरक और कीटनाशक से न केवल भूमि की गुणवत्ता में कमी आती है, बल्कि नदियों का जल को, भूमि जल को और सरोवरों का जल भी दूषित होता है।

प्रदूषक तत्व चाहे वायु में हो, या जल में, या भूमि में, वह आखिरकार सांस, जल और भोजन के माध्यम से मनुष्य के शरीरत कभी पहुँचते है जिससे कि स्वास्थ भी अपनी स्वाभाविक स्थिति में नहीं रह पता। उसी तरह ध्वनि प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जिसके बारे में ज़्यादा चर्चा नहीं करी जाती है, पर यह भी उतना ही अहितकारी है जितने कि और प्रदुषण के प्रकार। कारखानो की मशीनों और यातायात के शोर से उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, नींद की गड़बड़ी और तनाव जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाने की संभावना रहती है।

ग्लोबल वार्मिंग संकट

ग्लोबल वार्मिंग के कारण हो रहे जलवायु परिवर्तन में भारत की कितनी भूमिका है इसका विश्लेषण किया जाये तो पता लगता है कि

भारत का समुचित कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन 2017 में करीब 2.65 मेट्रिक गीगा टन था। इस कारण भारत तीसरा सबसे बड़ा कार्बन प्रदूषक है। भारत में प्रति व्यक्ति कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन लगभग1.96 टन है यानि प्रति व्यक्ति की ऊर्जा खपत को पूरा करने के लिए इतनी कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन होता है। पर यहाँ एक विसंगति है। भारत में औसत वार्षिक प्रति व्यक्ति कार्बन फुट–प्रिंट शहरी क्षेत्र में 2.5 टन है तथा ग्रामीण क्षेत्र में यह 0.85 टन है। ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन के लिए मुख्यतः परिवहन, बिजली और भवन निर्माण क्षेत्र में हो रही ऊर्जा खपत ही जिम्मेदार है। भारत है भी विश्व का दूसरा सबसे बड़ा कोयला उपभोक्ता। 2050 तक भारत में जलवायु परिवर्तन के कारण लगभग आधी आबादी प्रभावित होगी। जलवायु विस्थापन से शहरों के सीमित संसाधनों पर अनुपातहीन दबाव पड़ने से जलवायु परिवर्तन की गति में चक्रवृद्धि ही होगी। ऐसे में भारत के लिए ग्लोबल वार्मिंग एक विकराल चुनौती है। गत कई वर्षों से बारिश, गर्मी और सर्दियों के मौसमों की आवृत्ति और तीव्रता में परिवर्तनशीलता देखी जा रही है जिसके कारण फसलों की उत्पादकता प्रभावित हुई है। बाढ़, कड़ी गर्मी की लहर और सूखे की चपेट में आने वाले क्षेत्रों की सूचि में वर्ष–दर–वर्ष वृद्धि होती जा रही है।

ग्लोबल वार्मिंग के फलस्वरूप समुद्री जलस्तर भी बढ़ता जा रहा है तथा तटीय इलाकों में यह प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा है। जंगलों को ग्लोबल वार्मिंग से निपटने का सबसे प्रभावी उपाय माना जाता है पर हाल के समय में बड़े–बड़े जंगलों में लग रही भीषण आग ग्लोबल वार्मिंग की गति और तेज कर देती हैं। आग चाहे उत्तरी अमेरिका के कैलिफोर्निया के जंगलों में लगे या दक्षिणी अमेरिका के अमेजन के जंगलों में या भारत के उत्तराखंड में, वास्तव में तो वह प्रकृति की बहुमूल्य सम्पदा को ही नष्ट करती हैं जिसे प्रकृति ने न जाने कितने हजारों सालों में बनाया होगा।

युवाओं का सामने आना

सामान्यतः अभिभावक भावी पीढ़ी के विकास के प्रति अत्यंत सजग पाए जाते है। परन्तु भावी पीढ़ी के उज्जवल भविष्य के लिए जैसे अच्छा स्वस्थ्य और अच्छी शिक्षा महत्वपूर्ण है वैसे ही प्रदुषण–मुक्त वातावरण जिसमें स्वच्छ वायु, जल और भूमि भी उतने ही महत्वूर्ण है। आज से 5 या 10 साल बाद पर्यावरण की गुणवत्ता में और कितनी गिरावट आएगी? क्या प्राकृतिक दृश्य केवल कुछ चुनिंदा स्थानों पर ही रह जायेंगे? क्या हर तरफ प्लास्टिक कचरे का ढेर होगा? क्या हर साल प्राकृतिक आपदाएं गहराती जाएँगी? इन सब प्रश्नों पर हम सामान्यतः विचार नहीं किया करते। परन्तु ये सब प्रश्न रिद्धिमा पाण्डे और आदित्य मुकर्जी जैसे विचारशील युवाओं के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ऐसे संवेदनशील युवाओं की पर्यावरण के सरंक्षण के प्रति तत्परता ने व्यस्कों को भी विचार करने पर विवश कर दिया है। ग्लोबल वार्मिंग और व्यापक प्लास्टिक कचरे के कारण हो रही पर्यावरण की दुर्दशा से बच्चें और किशोर बहुत चिंतित है। भारत की 8 वर्षीय लिसीप्रिया कँगुजम (Licypriya Kangujam) विश्व के सबसे कम उम्र के पर्यावरण एक्टिविस्टों में से एक हैं। उन्हें स्कूल जाने से ज्यादा महत्वपूर्ण लगा कि वे पर्यावरण की समस्याओं के लिए सजगता लाये। पर्यावरण और प्रकृति के दोहन को रोकने के लिए वयस्कों की तरफ से तत्परता से ठोस कदमों का अभाव है। ऐसे में बच्चों और युवाओं को ही अपना भविष्य सुनिश्चित करने के लिए आगे आना पड़ रहा है। हमारा कर्त्तव्य है कि बच्चों और युवाओं के आंदोलनों को बल देकर आश्वस्त करें कि उनके भविष्य में सुविधाओं के साथ साथ स्वच्छ पर्यावरण की भी सम्भावना हो सकती है।

वापस प्रकृति की ओर

प्रकृति को हमारी संकीर्ण विचारधारा ने केवल आर्थिक विकास करने के साधन के रूप में देखने को मजबूर कर दिया है। प्रकृति को केवल खनिज और ईंधन का भंडार मानने से मानवता का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत नुक्सान हुआ है। मनष्य के असंगत दखल से प्रकृति का जो संतुलन बिगड़ा है उससे मानवता भी खतरों से घिर गयी है। कई शारीरिक और मानसिक व्याधियों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कारण केवल और केवल मनुष्य की प्रकृति से दूरी हो जाना है। आवश्यकता है यह समझने की कि मनुष्य प्रकृति से किसी प्रकार अलग नहीं है। केवल भ्रान्ति वश ही हम प्रकृति से दूर होते जा रहे है पर देखा जाये तो हम अपने मूल स्वरुप से ही दूर हो रहे हैं। मनुष्य भी प्रकृति के ताने–बाने का ही अंग है। यदि ताना–बाना बिगड़ता है तो मनुष्य पर संकट आना स्वाभाविक है।

जलवायु परिवर्तन पर सामूहिक और व्यक्तिगत कार्रवाई

प्रदुषण–मुक्त दुनिया कैसी होती है इसकी एक झांकी कोविड वैश्विक महामारी के कारण लगाए गए लॉकडाउन के समय हमने देखी। हवा कई साल बाद इतनी स्वच्छ हो गयी थी, नदियाँ निर्मल हो गयी थी तथा प्रकृति अपने आपको बहाल करने लग गयी थी परंतु यह स्थायी समाधान नहीं है। जरूरत कारखानों और वाहनों को बंद करने की नहीं बल्कि उनको पर्यावरण के अनुकूल बनाने की है। कारखानों और वाहनों में ऊर्जा की पूर्ति के लिए जीवाश्म ईंधन (fossil fuels) के स्थान पर पुनर्भरणीय ऊर्जा (Renewable Energy) स्तोत्रों का उपयोग किया जाए। कारखानों के लिए सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा जैसे ऊर्जा स्तोत्र तथा वाहनों के लिए हाइड्रोजन ऊर्जा जैसे विकल्प प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग दोनों ही समस्याओं का समाधान है। व्यक्तिगत तौर पर सबसे प्रभावी समाधान है पर्यावरण और प्रकृति के प्रति विचारशील होना। हर नागरिक का दायित्व है कि पर्यावरण के प्रति सजगता लाये और ज्यादा से ज्यादा 'ग्रीन' या प्राकृतिक विकल्पों का चुनाव करें। ग्लोबल वार्मिंग की गति को कम करना केवल सरकारों का ही नहीं इस विश्व के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है।

जय हिन्द!

वृक्ष लगाओ, पर्यावरण बचाओ

तृषिता रोहिल्ला
पीएच.डी. शोधार्थी,
यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

मैं और मेरी माँ.....

अक्सर जेहन मे आता है ख्याल उसका,
उंगली मेरी थामे हाथ उसका,
चिंता में मेरी डूबी संसार उसका,
संकट मे अपने आंचल में छुपा लेना उसका,
डरते को गले से लगा लेना उसका,
मेरे लिए किसी से भी लड़ जाना उसका,
हाथ पकड़ मेरा पेंसिल चलाना उसका,
बैग थाम हाथ स्कूल मुझे छोड़ना उसका,
लंच ब्रेक मे दूध, ब्रेड, मखन, जैम लाना उसका,
दोस्तों साथ बैठ कर लंच शेयर कराना उसका,
न आता था पढ़ना उसको मगर..
किताब खोल साथ मेरे बैठ जाना उसका,
याद आता है हाथ से बने स्वादिष्ट खाना उसका,
क्लास मे अच्छे नंबर न आने पर शांत रहना उसका,
तु पढ लिख कर अफसर बने ये आशीर्वाद देना उसका,
मेरे उज्जवल भविष्य के लिए घर छोड़ बाहार काम करना उसका,
पहले घर, फिर बाहर, फिर घर मे बिना थके काम करना उसका,
नौकरी मिलने पर माथा मेरा चूम आशीष देना उसका,
मुझे आगे बढ़ते देख खुश होना उसका,
अपनी खुआई शैय्मार खामोश रह कर हँसते रहना उसका,
नौकरी के लिए बाहर आना मेरा,
दिल पर पत्थर रख बस स्टैंड मुझे छोडना उसका,
साये की तरह मेरे साथ रह कर
मुझे दूरी का एहसास न होने देना उसका,
सपने मे आकर अकेले न होने का एहसास कराना उसका,
सोने से पहले दूध पी लेना यह याद कराना उसका,
मै जहाँ रहूँ, खुश रहूँ, आबाद रहूँ,
दुआओं मे भगवान से बस यही मांगना उसका,
दिखता है मुझे होता सफेद सर के हर बाल उसका,
दिखता है, परिवार मे रह कर भी
मेरे बिना उदास चेहरा उसका,
वो कोई और नहीं वो है
मेरी माँ और मैं बेटा उसका।

अंशु वैद
वरिष्ठ सहायक
भौतिक विभाग

अपना रंग चढ़ा गया है

जिस दिन से तू महराम होकर
जीवन में मेरे आ गया है
बेरंग मेरी दुनिया के बीच अपना
रंग चढ़ा गया है

संगी साथी सारे भूल गए,
अपनी धुन में लगा गया है
दिल मेरा था कोरा कागज
हाथ में मेरे कलम पकड़ा गया है

रक्त हो गया श्याही मेरा
जिस्म लेख बना गया है
यादों की सौगात देकर
गहरी सोच में डाल गया है

यादें तेरी शब्द हुए
बन के गीत तू आ गया है
यादें भी लम्बी
गीत भी लम्बे

लम्बे रास्ते पर डाल गया है
इस रास्ते के साथी
मेरे कागज कलम बना गया है
देकर मीठी प्यारी यादें
रग रग में मेरे समां गया है
बेरंग मेरी दुनिया के बीच
अपना रंग चढ़ा गया है।

हरप्रीत कौर
पुस्तकालय सूचना अधिकारी
केन्द्रीय पुस्तकालय

नवनियुक्त संकाय सदस्य एवं कर्मचारीगण

डॉ. अर्घ बैनर्जी
सहायक प्राध्यापक
रासायनिक अभियांत्रिकी

डॉ. नवनीथ के मारथ
सहायक प्राध्यापक
यांत्रिक अभियांत्रिकी

डॉ. बोधिसत्वा दास
सहायक प्राध्यापक
जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी

श्री मोहित
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
भौतिकी

संरक्षक संपादक
प्रो. सरित कुमार दास
निदेशक,
भा.प्रौ.सं.रोपड़

परामर्शदाता संपादक
डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता
संकाय प्रभारी (हिंदी)
श्री लगवीश कुमार
हिंदी अधिकारी तथा संयुक्त कुलसचिव
भा.प्रौ.सं.रोपड़

संपादक
डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे
हिंदी अनुवादक,
भा.प्रौ.सं.रोपड़

अभिकल्प, प्रकाशन एवं मुद्रण
सुश्री प्रीतेंदर कौर
जनसंपर्क अधिकारी, भा.प्रौ.सं.रोपड़
संपादन सहयोग
श्री ऋतभ किशोर
छात्र समन्वयक (संगम पत्रिका),
पीएच.डी शोधार्थी, यांत्रिकी अभि. विभाग, भा.प्रौ.सं.रोपड़

speedways46@gmail.com